'Journal of Research & Development'
A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, July-2023, Volume-15 Issue-15

प्रयोजनमूलक हिन्दी : एक प्रासंगिकता

डॉ. रश्मी बी.वी.

प्राध्यापिका, युनिवर्सिटी कालेज, मंगलूरु, दक्षिण कन्नड़, कर्नाटक

Corresponding Author- डॉ. रश्मी बी.वी.

Email- rashubv2012@gmail.com

भारत कसे बहुभाषी देश की संप्रेषण–व्यवस्था में हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका है । शिक्षा, जनसंसार और ज्ञान–विज्ञान के प्रचार–प्रसार के साथ साथ अन्य कई नए व्यवहार क्षेत्र विकसित हो रहे है जिनमें हिन्दी का प्रयोग उत्तरोत्तर बढ़ा रहा है । स्वतंत्रता से पूर्व हिन्दी का प्रयोग और मुख्यतः साहित्य तक सीमित था । यह भाषा, कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास, आलोचना आदि विभिन्न साहित्यिक विधाओं में तो निखरकर आई । साथ ही सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों को भी अपने भीतर समेटनी गई । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी भारत संघ की राजभाषा के पद पर आसीन हुई तो इसने अपनी साहित्यिक परंपरा की सीमा को लाँघकर व्यावहारिक रूप भी धारण कर लिया । आज वह प्रशासन, व्यापार–वाणिज्य, बैंक, विज्ञान, प्राद्योगिकी, जनसंसार आदि तकनीकी क्षेत्रों में पादार्पण कर देश–विदेश या क्षेत्र–विशेष के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है । हिन्दी का यह व्यावहारिक रूप ही इसकी शक्ति बन गया है । अखिल भारतीय संदर्भ में हिन्दी का व्यवहार क्षेत्र सांस्कृतिक, साहित्यिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक, वाणिज्यिक, प्रशासनिक आदि विभिन्न कार्यक्षेत्रों तक फैला हुआ है ।

हमारे देश में जनसंचार माध्यम राजकीय और नीजी क्षेत्र में कार्यरत है तथा इन पर एक हद तक राजकीय नियंत्रण रहता है । आज अनेक टी.वी. उपग्रह चैनल जैसे आज तक ज़ी न्यूस, स्टार न्यूस, दूरदर्शन आदि जो मुख्यतः समाचार प्रसारित करते है, हिन्दी की प्रायोजनीयता के उदाहरण है । इससे हिन्दी रोजगार की भाषा बनकर उभरी है । हज़ारों समाचार पत्र–पत्रिकाएँ, रेडियों कार्यक्रम हिन्दी प्रायोजनीयता से जुड़े है । हिन्दी के कार्यक्रमों की जितनी लोक स्वीकृति है, उतनी किसी अन्य भाषा के कार्यक्रमों की नहीं है । विज्ञापन प्रयोजनमूलकता से सीधे सीधे संबंधित है । उदाहरणार्थ कुछ विज्ञापन प्रस्तुत है–बहुसाष्टि– या शीत पेय कंपनी कोकाकोला का विज्ञापन–ठंडा मतलब कोका–कोला । साक्षरता अभियान विज्ञापन इसी कारण इस क्षेत्र में हिन्दी प्रयोजनीयता के अधिक विकसित होने के प्रबल संभावनाएँ है । कंप्यूटर जनसंचार प्रशासन, निधि आदि विशिष्ट कार्यक्षेत्रों का विशिष्ट रूप होता है । इस भाषा रूप की अपनी अलग शब्दावली और संरचना होती है जो इसे विशिष्ट रूप प्रदान करती है । यह हिन्दी विषय के विशेषज्ञों के बीच विशिष्ट प्रयोजनों और विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयुक्त होती है ।

यदि डॉक्टर, इंजिनियर, विधिबेक्ता, वैज्ञानिक प्रशासक आदि किसी विषय अथवा मामलो पर परस्पर विचार–विमर्श करते है तो उनकी भाषा हिन्दी उसी विषय के अनुरूप अभिव्यक्ति होगी । हिन्दी के प्रख्यात कथाकार एवं आलोचक राजेन्द्र यादव ने हिन्दी की प्रयोजनीयता के बारे में लिखा है कि किसी भी भाषा के विकास की संभावना तब दिखती है जब उस माध्यम में बेहतर शिक्षा की व्यवस्था हो । कोई भी भाषा भावना से नहीं पनपती। भाषा के साथ कमाने खाने का तरीका क्या होगा, इस पर सोचने की किसी को फ़ुर्सत नहीं आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी माध्यम से ज्ञान–विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए ।

वर्तमान में संपूर्ण विश्व में सूचना क्रांति का शोर है और इस क्रांति के सबसे बड़े घटक के रूप में कंप्यूटर हमारे सामने है । भारत में नौवे एवं दशक में सूचना तकनीक का विकास इतनी तेज़ी से हुआ है कि इसने सैंकड़ों वर्षों के सूचना विकास को पीछे दिया है। बड़ी संख्या में शासकीय तथा निजी संस्थानों का कंप्यूटरीकरण हुआ है । जिससे कामकाज के परंपरागत तरीकों में परिवर्तन आया है । कंप्यूटर के प्रयोगों से हिन्दी की कामकाजी एवं प्रयोजनीयता संबंधी नई मान्यताएँ सामने आई है । कुल मिलाकर दैनिक गतिविधियों, साहित्य–संस्कृति एवं प्रशासनिक कार्यों में कम्प्यूटर्के प्रयोग के एक नई व्यावसायिक चेतना प्रस्फुटता हुई है और यह निरंतर विस्तार पा रही है । इसमें एक तरफ जहाँ रोजगार के नए क्षेत्रों का सृजन होगा, वहीं दूसरी तरफ हिन्दी की सामाजिक अहमीयत एवं प्रयोजन मूलकता में भी निस्संदेह विस्तार होगा ।

आज हिन्दी की प्रयोजनमूलकता को प्रायोगिक क्षेत्रों में तलाशने से आभास मिलता है कि हिन्दी की प्रयोजनीयता गतिशील हो रही है । हिन्दी साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, तकनीकी, उद्योग–प्रौद्योगिकी, व्यापार–व्यवहार, वाणिज्य शासनों प्रशासन, विधि एवं सामाजिक विज्ञानों के माध्यम की दिशा में अपनी प्रयोजनमूलकता सिद्ध कर चुकी है । निःसंदेह आगमी समय में हिन्दी की

प्रयोजनीयता को उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण की चुनौती के साथ साथ सूचना क्रांति के उपादानों से भी संघर्ष करना है । भारत सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से एक विकासशील देश है । प्रयोजनपरक आयाम क संबंध साहित्येतर विषयों से होता है जहाँ भाषा वस्तुनिष्ठ होती है और उसका लक्ष्य जीविकोपार्जन का साधन बनना है ।

प्रयोजनमूलक हिन्दी अंग्रेज़ी शब्द फंक्शनल का पर्याय है । इसके नामकरण के विषय में विज्ञानों में मतभेद है ।

१) फंक्शनल हिन्दी
२) कामकाजी हिन्दी
३) हिन्दी कार्मिक
४) व्यावहारिक हिन्दी
५) व्यावसायिक हिन्दी
६) प्रयोजनमूलक हिन्दी

अंग्रेज़ी शब्द फंक्शनल हिन्दी को यथावत् स्वीकार कर लेने के पक्ष में बहुत से विज्ञान है । कुछ विद्वान इसे कामकाजी हिन्दी कहना उपयुक्त मानते है । डॉ. शंक क्षेम डॉ. कंचन शर्मा जैसे विद्वान हिन्दी कार्मिक शब्द को सही मानते है ।

डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा के अनुसार निष्प्रयोजन हिन्दी कोई चीज़ नहीं है । लेकिन प्रयोजनात्मक विशेषण उसके व्यावहारिक पक्ष को अधिक उजागर करने के लिए प्रयुक्त किया गया है ।

डॉ. नगेंद्र के अनुसार प्रस्तुत प्रयोजनमूलक हिन्दी के विपरीत अगर कोड हिन्दी है तो वह निष्प्रयोजनमूलक हिन्दी नहीं वरन् आनन्दमूलक हिन्दी है । आनंद केंद्रित होता है और प्रयोजन समाज की ओर इशारा करता है । हम आनंदमूलक हिन्दी के विरोधी नहीं है । आनंदमूलक साहित्य के हम भी हिमायती है । पर सामाजिक आवश्यकताओं के संदर्भ में हम संप्रेषण के बुनियादो आधार को भी अपनी नजर से ओझल ही करना चाहते है ।

व्यावहारिक हिन्दी में हिन्दी के व्यावहारिक व्याकरण को पर्याप्त स्थान मिला है । परंतु फंक्शनल हिन्दी में केवल व्यावहारिक व्याकरण ही नहीं है अपितु २१वीं सदी के उदारवादी एवं बहुराष्ट्रीय परिवार के कामकाज में आनेवाली भारतीय भाषा का स्वरूप है ।
कामकाजी हिन्दी से प्रशासन, व्यापार, खेती–बाड़ी आदी सीमित क्षेत्रों की भाषा का बोध तो हो सकता है किंतु वैज्ञानिक, तकनीकी, सामाजिक, अनुसंधनात्म आदि के व्यापक–क्षेत्र इससे अछूते रह जाते है ।

संसार में प्रत्येक भाषा का प्रयोग किसी न किसी प्रयोजन के लिए ही होता है । बिना प्रयोजन के कोई भी भाषा नहीं रहती । विश्व में विज्ञान प्रौद्योगिकी अभूतपूर्व फैलान के साथ भारत में भी ज्ञान–विज्ञान और प्रौद्योगिकी की औध्वी उमड़ पड़ी । आज के ग्लोबल उदारीकरण और प्रौद्योगिकी व्यवसाय माध्यम के रूप में हिन्दी को समर्पित करना है । उसकी अंतर्निहित क्षमताओं को अभिव्यक्ति प्रदान करती है । प्रयोजनमूलक हिन्दी का प्रयुक्ति क्षेत्र तथा व्याप्ति, प्रशासन–परिचालन, प्रौद्योगिकीतथा ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्रों तक फैली हुई है। इस हिन्दी की अपनी विषिष्ट प्रयोजन परक तकनीकी शब्दावली होती है, जो सरकारी कार्यालय, मानविकी, विज्ञान एवं तकनीकी, वाणिज्य, विधि, अनुवाद, पत्रकारिता, इलेक्ट्रानिक क्षेत्र, दूरसंचार तथा कम्प्यूटर आदि सभी विधाओं को सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान करती है ।

प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप इस प्रकार है कि; कार्यालयी या प्रशासनिक हिन्दि, विधि क्षेत्र की हिन्दी; ऊचनार्थक एवं प्रचारात्मक हिन्दी; विज्ञापन की हिन्दी; साहित्यिक हिन्दी' वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिन्दी; औद्योगिकी या व्यापारिक एवं व्यावसायिक हिन्दी ।

अपनी अनुकूलशीलता के कारण संप्रेषण – माध्यम के रूप में अपनाई गई संपर्क भाषा हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ । इस प्रकार इसके अखिल भारतीय संप्रेषण आधार के कारण इसे देश में सभी क्षेत्रों में कार्यमूलक आधार प्राप्त हुआ। सामाजिकता के साथ साथ सांस्कृतिक आधार तभी प्राप्त हो सकता है जब क्षेत्र के बाहर और क्षेत्र के भीतर होनेवाले समवर्ती द्विभाषी आंदोलनों में गहरा संबंध और आत्मसात्करण हो । इस प्रक्रिया में हिन्द देश की शब्द संपदा को आत्मसात कर सामाजिक संस्कृति की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में उभरकर सामने आएगी और इसमें विभिन्न स्तरों पर क्षेत्रीय मुहावरों का बाहुल्य होगा । इस प्रक्रिया से तीन क्षेत्रों में अखिल भारतीय स्तर पर समाज सजात शब्दों के विकास और प्रचार प्रसार तथा राष्ट्रीय एकीकरण को भी बढ़ावा मिलेगा ।

कामकाजी हिन्दी से प्रशासन, व्यापर, खेती–बाड़ी आदि सीमित क्षेत्रों की भाषा का बोध तो हो सकता है किन्तु वैज्ञानिक, तकनीकी, सामाजिक, अनुसंधानात्मक आदि भाषा व्यापार–क्षेत्र इससे अछूते रह जाते है ।

संदर्भ ग्रंथसूची

१) प्रयोजनमुलक हिंदी – प्रो सूर्यप्रसाद दीक्षित
२) प्रयोजनमुलक हिंदी – डॉ नरेश मिर्शा
३) पयोजनमुलक हिंदी की नई भूमीका कैलाश नाथ
४) प्रयोजनमुलक हिंदी – डॉ मीना राजपूत पांडे